दूर शिक्षण

ब्लॉक-1

अस्पताल प्रबन्धन के सिद्धान्त और पद्धतियां

(Management Principles and Practices in Hospitals)

(हिन्दी रुपान्तर : केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग)

राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान
न्यू महरौली रोड, मुनीरका, नई दिल्ली-110067

National Institute of Health and Family Welfare
New Mehrauli Road, Munirka, New Delhi-110067

आरोग्यम् सुखसम्पदा

दूरशिक्षण के माध्यम से अस्पताल प्रबन्धन में स्नातकोत्तर सर्टीफिकेट पाठ्यक्रम

(P.G.Certificate Course in Hospital Management through Distance Learning)

	पृष्ठ संख्या
खण्ड - I	1
अस्पताल प्रबन्धन सिद्धान्त और पद्धतियां	
यूनिट - I	3
प्रबन्धन सिद्धान्त और प्रक्रिया	
यूनिट - II	48
आयोजना	
यूनिट - III	64
संगठन और नियंत्रण	

पाठ्यक्रम कोर टीम

पाठ्यक्रम निदेशक	-प्रोफेसर एम.सी.कपिलाश्रमी
पाठ्यक्रम समन्वयकर्ता	-डा.जे.के.दास

यूनिट लेखकः

डा.आर.एस. गुप्ता	पूर्व व्याख्याता, राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं प.क. संस्थान, नई दिल्ली
डा.वाई.पी.गुप्ता	पूर्व व्याख्याता, राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं प.क. संस्थान, नई दिल्ली
कर्नल (डा.) आर.एन.बसु	मुख्य कार्यकारी अधिकारी और चिकित्सा निदेशक, हाई मेडिकेयर एण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पटना

संपादकीय मण्डल

प्रो.एम.सी. कपिलाश्रमी -निदेशक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान, नई दिल्ली

डा.जे.के.दास -चिकित्सकीय देखरेख एवं अस्पताल प्रशासन विभाग, राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान, नई दिल्ली

कर्नल (डा.) आर.एन.बसु -मुख्य कार्यकारी अधिकारी और चिकित्सा निदेशक, हाई मेडिकेयर एण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पटना

आभार

पाठ्यक्रम की कोर टीम, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन के दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा आरम्भिक अवस्था में इस परियोजना को क्रियान्वित करने और विकसित करने की दिशा में प्रदत्त समर्थन के लिए उनका हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

हम इस संस्थान के चिकित्सकीय देखरेख एवं अस्पताल प्रशासन विभाग के अंशकालिक व्याख्याता डा. आर.टी. आनन्द का इन संशोधित मॉड्यूलों को विकसित करने में उनके द्वारा प्रदत्त सतत् सहायता, सहयोग एवं तकनीकी समर्थन के लिए आभार व्यक्त करते हैं।

डी.एच.ए. पाठ्यक्रम के हमारे स्नातकोत्तर छात्र डा विनीत गोयल और डा.अनामिका खन्ना ने इस दस्तावेज़ के संपादन और शब्द संसाधन में प्रशंसनीय कार्य किया है, हम उनके प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं।

प्राक्कथन

प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा के माध्यम से सभी के लिए स्वास्थ्य' दीर्घकाल से ही हमारा उद्देश्य रहा है। स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में अस्पताल एक महत्पूर्ण कड़ी है। यद्यपि चिकित्सा अधिकारियों की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में अग्रणी भूमिका है और वे अस्पतालों में प्रबन्धक हैं लेकिन इन क्षेत्रों में उन्हें बहुत कम प्रशिक्षण मिलता है। चिकित्सा पाठ्यक्रम चाहे वह स्नातक स्तरीय हो या स्नातकोत्तर, प्रबन्धकीय कौशल और नेतृत्व के गुणों के बारे में कोई प्रशिक्षण प्रदान नहीं करता है। इसके परिणाम स्वरुप डाक्टर सामान्यता प्रबन्धकीय कौशल स्वतः ही अर्जित करते हैं। सामान्य अनुभव भी यही रहा है कि उन्हें इन मुद्दों पर सलाह के लिए अपने अधीनस्तों तथा सचिवीय/लिपिकीय स्टाफ पर अनिवार्य रुप से निर्भर रहना पड़ता है। अस्पताल प्रबन्धन में स्नातकोत्तर सर्टीफिकेट पाठ्यक्रम (दूर शिक्षण के माध्यम से) चिकित्सा व्यवसाय इस रिक्ति को भरने का एक प्रयास है।

उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान में आरम्भ में विश्व स्वास्थ्य संगठन की वित्तीय सहायता से दूर शिक्षण के माध्यम से अस्पताल प्रबन्धन में एक स्नातकोत्तर सर्टीफिकेट पाठ्यक्रम तैयार किया है जिससे अस्पताल प्रशासन से जुड़े/रुचि रखने वाले बड़ी संख्या में चिकित्सा कार्मिकों को सुगम पहुंच और उत्कृष्ट अवार प्रदान किया जा सके। राष्ट्रीय कार्यशाला में विभिन्न संस्थाओं से ख्यातिप्राप्त विशेषों द्वारा अस्पताल प्रशासन में प्रशिक्षण जरुरतों की पहचान करने के बाद कार्यक्रम और प्रशिक्षण सामग्री/साधन इस प्रयोजन के लिए गठित एक विशेषज्ञ समूह द्वारा विकसित किए गए। पठनीयता, प्रासंगिकता, स्पष्टता और जीवत्त स्थितियों के लिए प्रयोजनीयता का मूल्याकंन करने के लिए शिक्षण सामग्रियों का पूर्व परीक्षण भी किया गया। प्रशिक्षण सामग्रियों को अन्तिम रुप दिया गया और विशेषज्ञ कोर समूह द्वारा उन्हें प्रयोक्ता के लिए और अधिक अनुकूल बनाने का प्रयास किया गया। इसके बाद मैनुअलों के रुप में उपलब्ध शिक्षण सामग्री में विशेषज्ञों द्वारा वर्ष 2002 में व्यापक रुप से संशोधन किया गया है।

मुझे आशा है कि प्रयोक्ता के अनुकूल तैयार की गई यह यूनिटें इस पाठ्यक्रम में भाग लेने वाले डाक्टरों की पबन्धकीय क्षमताओं के विकास में उपयोगी सिद्ध होगीं।

एम.सी.कपिलाश्रमी
निदेशक, रास्वापक संस्थान

नई दिल्ली
अगस्त, 2002